सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-3 | 7 से 21 फरवरी, 2013 | मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती | मूल्य : 2 रुपये

नारी पर जुल्म को रोकने के लिए संकल्पबद्ध हो रहे हैं छात्र-नौजवान-आम लोग

एक नया सामाजिक आन्दोलन

अहमदाबाद (गुजरात) : देश में बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के खिलाफ 20 जनवरी को सरदार बाग, अहमदाबाद में ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। छात्रों ने ड्रामा, पेण्टिंगों, कविताओं, गानों, चर्चाओं द्वारा अपने विचार व्यक्त किए। दिल्ली में गैंगरेप पीड़ित छात्रों को पुष्पांजलि अर्पित की गई। बलात्कार को रोकने के लिए छात्रों ने जीवन भर संघर्ष जारी रखने की सामूहिक तौर पर शपथ ली।

महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष जारी रखने के आह्वान को ले कर सभा

इलाहाबाद: 13 जनवरी को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (ए.आई.एम.एस.एस.) के आवाहन पर अल्लापुर, लेबर चौराहे पर महिलाओं ने दिल्ली गैंगरेप की शिकार बहादुर लड़की की याद में मोमबत्ती जला कर महिलाओं पर बढ़ते अपराध के खिलाफ सभी महिलाओं को भारी संख्या में एकजुट होने की अपील की।

इस मौके पर राजेश्वरी देवी ने कहा कि आज तीन माह की बच्ची से लेकर सत्तर साल तक की वृद्धा कोई महिला सुरक्षित नहीं है। महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिये खुद बाहर निकल कर आना होगा। जगत तारण इण्टर कालेज की पूर्व प्राध्यापिका डॉ. कल्याणी रायचौधरी ने कहा कि महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ देश भर में एक सशक्त आन्दोलन चलाने की आवश्यकता पर बल दिया।

ए.आई.एम.एस.एस. की प्रदेश संयोजिका रश्मि मालवीय ने अश्लील सिनेमा, टी.वी. कार्यक्रमों में कामुक और हिंसक दृश्यों के प्रसारण, फूहड़ विज्ञापनों और शराब की दुकानों पर रोक लगाने की मांग की, क्योंकि यही वास्तव में अपराधों की जड़ हैं।

सभा का संचालन डॉ. झरना मालवीय ने किया। सभा में सुश्री ज्ञान शर्मा, सुमनलता शुक्ला, अंजली श्रीवास्तव, संध्या मिश्रा, लता शर्मा सहित अनेक महिलाओं ने भागीदारी की।

बुडलाढ़ा (पंजाब) : दिल्ली गैंगरेप की घटना का विरोध

केरल के त्रिवेन्द्रम में 29 जनवरी को ए.आई.एम.एस.एस. के तीसरे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के खुले अधिवेशन के अवसर पर हुई विशाल सभा का एकांश

(विस्तार से खबरें अगले अंक में प्रकाशित की जाएंगी)

एआईयूटीयूसी का ऑल इण्डिया मजदूर सम्मेलन

मजदूर आन्दोलन का लक्ष्य है नई संस्कृति के आधार पर नई सभ्यता

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

मंच पर बैठे ग्रीस, श्रीलंका, नेपाल से आए प्यारे बिरादराना प्रतिनिधियो, एआईयूटीयूसी के महासचिव, उपाध्यक्षो और सचिवमण्डल सदस्यो, हमारे मेहमानों और भारत के विभिन्न हिस्सों से, खासकर पूरे कर्नाटक से विशाल संख्या में भाग लेने आए लोगो, कॉमरेडो और प्रतिनिधियो, शुरूआत में ही मैं हमारी प्रिय ट्रेड यूनियन एआईयूटीयूसी (ऑल इण्डिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेण्टर) के 20वें अखिल भारतीय सम्मेलन के ऐतिहासिक अवसर पर आप सबको अपना क्रान्तिकारी अभिनन्दन देना चाहता हूँ। हम यह सम्मेलन महज आर्थिक संकट ही नहीं बल्कि राजनैतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, शैक्षणिक चौतरफा संकट के बीच अपना यह सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं। यह संकट दरअसल जीवन के तमाम पहलुओं को समेटे हुए है, यह लगातार बढ़ता जा रहा है और जीवन को दयनीय, असहनीय, दमघोंटू बनाता जा रहा है। मैं इस संकट की प्रकृति की ज्यादा विस्तार से व्याख्या नहीं करूँगा। आप सब इसके भुक्तभोगी हैं। आप जानते हैं हमारे देश में महंगाई की क्या हालत है, रोजगार की क्या स्थिति है, कैसे बढ़ती छंटनी, तालाबंदी मेहनतकश लोगों के जीवन को दु:खमय बनाती जा रही है। इसका बखान करने की जरूरत नहीं है, आपको सब पता ही है। राजनैतिक हालातों पर भी विस्तृत व्याख्या की जरूरत नहीं है, यह सरकारों के रवैए से ही देखा जा सकता है, उदाहरण के लिए, हरियाणा में गुड़गाँव में और वह भी एक विदेशी जापानी कंपनी होण्डा में यूनियन बनाने के अधिकार के लिए लड़ रहे होण्डा मजदूरों के मामले में देख लीजिए कैसे पुलिस ने कलैक्ट्रेट की तरफ कूँच कर रहे विरोध प्रदर्शनकारियों को घेर कर बेरहमी से पीटा, लेकिन सरकार ने कोई परवाह नहीं की। इसकी बजाय सरकार ने मजदूर आन्दोलन को क्रूरता से दबाने के लिए पुलिस बल का इस्तेमाल किया। स्थिति यह है। इसी गुड़गाँव के पास मारुति सुजुकी कम्पनी के मानेसर प्लांट में आन्दोलन करने के 'जुर्म' की वजह से ही 500 से ऊपर मजदूरों को निकाल दिया गया, बर्खास्त कर दिया गया, बेरोजगार कर दिया, लेकिन सरकार ने मजदूरों कोई बात नहीं सुनी, कोई कदम नहीं उठाया। वे इस देश के मजदूर वर्ग की बलि चढ़ा कर विदेशी पूँजी को बचाने पर तुले हुए हैं। यह है राजनैतिक स्थिति। संस्कृति व नीति-नैतिकता के क्षेत्र में संकट को अगर आप टेलिविज़न खोलेंगे तो आप देख पाएंगे। हर तरह के अपराध, खासकर महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराध खौफनाक ढंग से बढ़ते जा रहे हैं; इस देश में, यहाँ तक कि देश की राजधानी, दिल्ली में भी कोई महिला सुरक्षित नहीं है; चाहे हस्पताल हो, विश्वविद्यालय हो, बस हो या गली-कूँचा, इस देश में महिलाएँ किसी जगह सुरक्षित नहीं; हर राज्य में यही सब हो रहा है; बंगलुरू में भी ये अपराध कुछ कम नहीं हैं। जहाँ दिल्ली में और देश के विभिन्न हिस्सों व दुनिया में जोरदार जन-आन्दोलन उभर रहे हैं, वहीं ये अपराधी पूरी आजादी से कार्रवाइयाँ कर रहे हैं। आए दिन बलात्कार के मामले दर्ज हो रहे हैं, आप अखबार खोलेंगे तो यही खबर पाएंगे; चाहे तमिलनाडु हो, कर्नाटक हो या बंगाल जो सास्कृतिक आन्दोलन की भूमि के तौर पर जाना जाता था, किसी समय प्रचण्ड राजनैतिक आन्दोलन, क्रान्तिकारी आन्दोलन की भूमि के तौर पर जाना जाता था, वहाँ भी बिना किसी शर्म लिहाज के इसी परिघटना की बारम्बार पुनरावर्ती होती जा रही है और यह क्यों नहीं होगी? सभी संसदीय राजनैतिक पार्टियाँ विधानसभा और लोकसभा चुनावों में बलात्कारियों को उम्मीदवार का टिकट दे रही हैं। अपराधी आसानी से सरकारों के रुख को भांप लेते हैं। जब हजारों हजार लोग दिल्ली की सड़कों और राजपथ पर भी आन्दोलन में उतर पड़े थे, शान्तिपूर्ण बैठे हुए थे, जब वे आश्वासन चाहते थे कि आइन्दा ऐसा नहीं होगा, तब सरकार ने कोई आश्वासन नहीं दिया; इसकी बजाय उन पर पानी की बौछारें छोड़ी, सर्दियों के सबसे ठण्डे दिन उन पर ठण्डा पानी डाला, आँसू गैस के गोले दागे, लाठियाँ चलाई। इससे अपराधियों को क्या संदेश गया? यही कि आप अपना जुर्म करना जारी रखिए, अगर इसका विरोध होगा तो विरोध करनेवालों को हम देख लेंगे। सरकार की कार्रवाई ने इसके अलावा और क्या संदेश दिया? ऐसी है सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति। मैंने तो यहाँ जरा-सी ही बताई है। हमारे देश में हालात का यह केवल एक ही पहलू है, सारे पहलू नहीं। ज्यों-ज्यों नीति-नैतिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में संकट बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों आन्दोलन भी फूट पड़ते जा रहे हैं। इसलिए यह कोई एकतरफा बात नहीं है, स्थिति केवल बिल्कुल अंधकारमय ही नहीं है। प्रकृति या समाज में कोई एकतरफा बात नहीं होती है, कुछ भी परम या शाश्वत (एब्सोल्यूट) नहीं होता है, कोई परम अंधेरा नहीं होता है, उजाला भी होता है। यह बात ठीक है कि कभी-कभी अंधेरा हावी हो जाता है, लेकिन अब हम देखते हैं कि इस तरह के दमन-उत्पीड़न, सांस्कृतिक पतन से बार-बार परेशान होने के बाद, अब आन्दोलन उभर रहे हैं। सामाजिक चिन्तन और आन्दोलन की तरफ एक रुझान है, जो अत्यन्त सराहनीय है। एक पर एक आन्दोलन उभरते जा रहे हैं। ज्यों-ज्यों संकट बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों मजदूर वर्ग के आन्दोलन भी उभरते जा रहे हैं। हाल-फिलहाल आप ग्रीस, स्पेन, पुर्तगाल से लेकर पूरे यूरोप में आन्दोलन की जबरदस्त लहरें देख चुके हैं, यहाँ तक कि पूँजीवाद के गढ़ अमेरिका तक में वॉल स्ट्रीट दखल करो आन्दोलन देख चुके हैं। पूँजीवाद के खिलाफ लाखों लाख मजदूर आन्दोलनों में कूद पड़े। मार्क्सवाद और समाजवाद के खिलाफ बुर्जुआ वर्ग, पूँजीपतियों द्वारा लम्बे अर्से से किए गए दुष्प्रचार के बावजूद पूँजीवाद के खिलाफ लोगों का आक्रोश फूट पड़ने से कोई नहीं रोक पाया। समाजवाद के पतन खासकर सोवियत यूनियन में समाजवाद के ढह जाने के बाद लोगों में, निश्चय ही एक उदासी छा गई थी। अब मजदूर वर्ग अपने जीवन से यह अहसास कर रहा है कि पूँजीवाद मृतप्राय है, यह जीवन को कुछ भी अच्छा नहीं दे सकता, पूँजीवाद मरणासन्न हो चुका है। पिछली सदी की शुरूआत में ही लेनिन ने यह दिखाया था, रूस में क्रान्ति करके यह साबित कर दिया था। तब से लेकर अब तक सौ साल बीत चुके हैं; वह मरता हुआ पूँजीवाद दुनिया भर में भद्दा रूप ले चुका है; मध्य पूर्व में अरब देशों में लाखों-लाख लोग आन्दोलन में कूद पड़े हैं। भारत में भी यही आलम है। दिल्ली में जो कुछ हो रहा है, लोग ही हैं जो यह कर रहे हैं, किसी ने उन्हें संगठित नहीं किया, कांग्रेस या बीजेपी की बात तो छोड़ो, किसी भी बड़ी राजनैतिक पार्टी, यहाँ तक कि सीपीआई, सीपीएम, सीपीआई-एमएल, कोई भी पार्टी लोगों को संगठित करने के आन्दोलन में नहीं है; लोग खुद ही संगठित हो गए हैं; इस अन्याय के विरुद्ध, महिलाओं पर हो रहे अपराधों के खिलाफ अगर आप आन्दोलन की अगुआई करें, तो लोग आपका भरपूर साथ देंगे। मध्य प्रदेश में हमारा संगठन बहुत बड़ा नहीं है। हमारी पार्टी ने ग्वालियर में कल बंद का आह्वान किया था और यह पूर्ण सफल हुआ। समूचा ग्वालियर बन्द रहा। इसलिए कॉमरेडो, निराशा-हताशा की कोई वजह नहीं है। एक तरफ संकट बढ़ रहा है, दूसरी तरफ आन्दोलन की दिशा में मजदूर वर्ग और अन्य शोषित लोग दोड़े चले आ रहे हैं। यह दुनिया के मजदूर वर्ग आन्दोलन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें हमारे निभाने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। कॉमरेडो, मैं यह आपको बताना चाहूँगा।

अगर आप यूरोप में, मध्य पूर्व में, अमेरिका में या हमारे देश में आन्दोलनों के पीछे कारण का ध्यान से अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि विभिन्न देशों में आन्दोलनों के पीछे ऊपरी तौर पर देखने से चाहे अलग-अलग कारण थे, लेकिन चाहे यूरोप हो, अफ्रीका हो या मध्यपूर्ण, हर जगह आन्दोलन के कारण का अगर आप गहराई से अध्ययन करें तो इनके पीछे वही एक ही कारण पाएंगे, ये सब पूँजीवाद के निर्मम शोषण और क्रूर दमनकारी शासन के खिलाफ आन्दोलन हैं। पूँजीवाद ही इसका कारण है। हकीकत यह है कि अलग-अलग से इन सब आन्दोलनों को लिया जाए तो ये समाज में आमूल-चूल बदलाव लाने की हद तक जबरदस्त सम्भावनाएं और क्षमताएं रखते हैं। लेकिन ऐसा नहीं हो सका; बदकिस्मती से, आमल-चूल बदलाव लाने की सम्भावना से भरपूर ऐसे आशाजनक विशाल आन्दोलन आखिरकार मंजिल पर नहीं पहुँच पाए। क्यों? यही जानने की जरूरत है।

ऐसा इस वजह से हुआ, जैसा कि महान लेनिन ने बहुत अर्सा पहले हमें सिखाया था कि एक आन्दोलन चाहे कितना ही बड़ा और ताकतवर क्यों न हो, अगर यह एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त और क्रान्तिकारी पार्टी के बिना है तो कोई क्रान्ति नहीं होगी। चाहे यह यूरोप में हो या मध्यपूर्व में, वहाँ कोई क्रान्तिकारी नेतृत्व नहीं था, कोई क्रान्तिकारी लाइन नहीं थी, यही वजह है कि आन्दोलन क्रान्ति हुए बिना ही आन्दोलन बंद हो गए। इनसे यह सबक हमें सीखना है। जब हम देश में शक्तिशाली आन्दोलन गठित कर रहे हैं, तो हमें सही क्रान्तिकारी लाइन, सही क्रान्तिकारी नेतृत्व, एक सही क्रान्तिकारी पार्टी को खोजना और तलाशना होगा क्योंकि बिना क्रान्तिकारी पार्टी के क्रान्ति नहीं होगी। मजदूर वर्ग को इस वक्त यह अहसास करना होगा।

इसलिए कॉमरेडो, मैं एक बुनियादी बात आपको बताता हूँ जो कॉमरेड शिवदास घोष ने लेनिन की इस सीख को दोहराते हुए बार-बार कही थी, वह यह कि पूँजीवादी समाज के शोषण के कारण गुस्से से अक्सर आन्दोलन फूट पड़ेंगे; लहर के बाद लहर के रूप में आन्दोलन आएंगे और आमूल-चूल बदलाव, क्रान्ति के लिए इन्सान के जमीर को ललकारेंगे; लेकिन यह तब तक नहीं आएगी जब तक कि मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी पाटी इतनी ताकतवर न हो कि यह लोगों की अगुआई कर सके, उन्हें संगठित कर सके और उन्हें सत्ता प्राप्ति तक ले जा सके। अब इसी की जरूरत है।

सबसे पहले हमें समझना होगा कि भारत एक पूँजीवादी देश है; सिर्फ पूँजीवादी ही नहीं बल्कि यह एक साम्राज्यवादी ताकत है। यह अपने छोट-छोटे पड़ोसियों का शोषण कर रहा है, चाहे वह श्रीलंका हो, नेपाल हो, बंगलादेश हो या पाकिस्तान; इन देशों की जनता समझती है कि कैसे भारत एक ताकतवर साम्राज्यवादी देश की तरह उभर रहा है और कैसे भारत क्षेत्रीय प्रभुत्व कायम करता जा रहा है और कैसे इन देशों में शोषण-दमन जारी रखे हुए है।

सीपीआई, सीपीआई(एम), सीपीआई(एमएल) और स्वाभाविक है कि उनकी ट्रेड यूनियनें यह नहीं मानती कि भारत एक पूँजीवादी देश है; उनका मानना है कि हमें मजदूर वर्ग के नेतृत्व में यहाँ बुर्जुआ जनवादी क्रान्ति लानी चाहिए और इस तरह यह जनता की जनवादी क्रान्ति होगी और उस क्रान्ति में बुर्जुआ वर्ग, पूँजीपति वर्ग एक मित्र शक्ति होगा। तब आन्दोलन, क्रान्ति किसके खिलाफ होगी? देश का शोषण ताकतवर पूँजीपति घरानों, टाटा, बिरला, गोयनका, अम्बानी के द्वारा किया जा रहा है। इनके अलावा और किसके खिलाफ दिशा-निर्देशित होगी अनकी जनता की जनवादी क्रान्ति? नक्सलवादी यह नहीं मानते कि भारत एक पूँजीवादी देश है। उनके मतानुसार यह अर्ध-औपनिवेशिक, अर्ध-सामन्ती देश है। ऐसी है उनकी समझदारी। जबकि यह भारत कई छोटे-छोटे देशों को अपने अधीन करता जा रहा है। वे भारत में क्रान्ति का नेतृत्व नहीं कर सकते। मजदूर वर्ग को जानना होगा कि इसका असली दुश्मन पूँजीवाद और पूँजीवादी राजसत्ता है जो पूँजीवादी शोषण-उत्पीड़न की रक्षा करती है।

इन सब बातों को और भी बारीकी से देखते हुए मजदूरों को समझना होगा, पूरे के पूरे मजदूर वर्ग को समझना होगा कि भले ही चाहे एक पार्टी यह मानती हो कि भारत एक पूँजीवादी देश है और पूँजीवाद को उखाड़

(शेष पृष्ठ 6 पर)

हड़ताल के विषय में

लेनिन

इधर कुछ वर्षों से रूस में मज़दूरों की हड़तालें बारंबार हो रही हैं। एक भी ऐसी औद्योगिक गुबेर्निया नहीं है, जहाँ कई हड़तालें न हुई हों। और बड़े शहरों में तो हड़तालें कभी रुकती ही नहीं। इसलिए यह बोधगम्य बात है कि वर्ग-सचेत मज़दूर तथा समाजवादी हड़तालों के महत्व, उन्हें संचालित करने की विधियों तथा उनमें भाग लेनवाले समाजवादियों के कार्यभारों के प्रश्न में अधिकाधिक सतत रूप में दिलचस्पी लेते हैं।

हम यहाँ इन प्रश्नों के विषय में अपने कुछ विचारों की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे। अपने पहले लेख में हमारी योजना आम तौर पर मज़दूर वर्ग आन्दोलन में हड़तालों के महत्व की चर्चा करने की है; दूसरे लेख में हम रूस में हड़ताल-विरोधी कानूनों की चर्चा करेंगे तथा तीसरे में इस बात की चर्चा करेंगे कि रूस में हड़तालें किस तरह की जाती थीं और की जाती हैं तथा उनके प्रति वर्ग-सचेत मज़दूरों को क्या रुख़ अपनाना चाहिए।

सबसे पहले हमें हड़तालों के शुरू होने और फैलने का कारण ढूंढ़ना चाहिए। यदि कोई आदमी हड़तालों को याद करेगा, जिनकी उसे व्यक्तिगत अनुभव से, दूसरों से सुनी रिपोर्टों या अख़बारों की ख़बरों के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई हो, तो वह तुरन्त देख लेगा कि जहाँ कहीं बड़ी फैक्ट्रियाँ हैं तथा उनकी संख्या बढ़ती जाती हैं, वहाँ हड़तालें होती तथा फैलती हैं। सैकड़ों (कभी-कभी हज़ारों तक) लोगों को काम पर रखनेवाली बड़ी फैक्ट्रियों में एक भी ऐसी फैक्ट्री ढूंढ़ना सम्भव नहीं होगा, जहाँ हड़तालें न हुई हों। जब रूस में केवल चन्द बड़ी फैक्ट्रियाँ थीं, तो हड़तालें भी कम होती थीं। परन्तु जबसे बड़े औद्योगिक जिलों और नए नगरों तथा गांवों में बड़ी फैक्ट्रियों की तादाद बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही है, हड़तालें बारंबार होने लगी हैं।

क्या कारण है कि बड़े पैमाने का फैक्ट्री उत्पादन हमेशा हड़तालों को जन्म देता है? इसका कारण यह है कि पूँजीवाद मालिकों के ख़िलाफ मजदूरों के संघर्ष को लाज़िमी तौर पर जन्म देता है तथा जहाँ उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है, वहाँ संघर्ष अनिवार्य ढंग से हड़तालों का रूप ग्रहण करता है।

आइए, इस पर प्रकाश डालें।

पूँजीवाद नाम उस सामाजिक व्यवस्था को दिया गया है, जिसके अन्तर्गत ज़मीन, फैक्ट्रियाँ, औज़ार, आदि पर थोड़े-से भूस्वामियों तथा पूँजीपतियों का स्वामित्व होता है, जबकि उन समुदाय के पास कोई सम्पत्ति नहीं होती या बहुत कम हाती है तथा वह उजरती मज़दूर बनने के लिए बाधित होता है। भूस्वामी तथा फैक्ट्री मालिक मजदूरों को उजरत पर रखते हैं और उनसे इस या उस किस्म का माल तैयार कराते हैं, जिसे वे मण्डी मे बेचते हैं। इसके अलावा फैक्ट्री मालिक मजदूरों को केवल इतनी मजूरी देते हैं, जो उनके तथा उनके परिवारों के मात्र निर्वाह की व्यवस्था करती है, जबकि इस परिमाण से ऊपर मजदूर जितना भी पैदा करता है, वह फैक्ट्री मालिक की जेब में उसके मुनाफे के रूप में चला जाता है। इस प्रकार पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत जन-समुदाय दूसरों का उजरती मजदूर होता है, वह अपने लिए काम नहीं करता, अपितु मजूरी पाने के वास्ते मालिकों के लिए काम करता है। यह बात समझ में आनेवाली है कि मालिक हमेशा मजूरी घटाने का प्रयत्न करते हैं: मजदूरों को वे जितना कम देंगे, उनका मुनाफा उतना ही अधिक होगा। मजदूर अधिक से अधिक मजूरी हासिल करने का प्रयत्न करते हैं, ताकि अपने परिवारों को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन दे सकें, अच्छे घरों में रह सकें, दूसरे लोगों की तरह अच्छे कपड़े पहन सकें तथा भिखारियों की तरह न लगें। इस प्रकार मालिकों तथा मजदूरों के बीच मजूरी की वजह से निरन्तर संघर्ष चल रहा है; मालिक जिस किसी मजदूर को उपयुक्त समझता है, उसे उजरत पर हासिल करने के लिए स्वतन्त्र है, इसलिए वह सबसे सस्ते मजदूर की तलाश करता है। मजदूर अपनी मर्जी के मालिक को अपना श्रम उजरत पर देने के लिए स्वतंत्र है, इस तरह वह सबसे महंगे मालिक की तलाश करता है, जो उसे सबसे ज्यादा देगा। मजदूर चाहे देहात में काम करे या शहर में, वह अपना श्रम उजरत पर चाहे ज़मींदार को दे या धनी किसान को, ठेकेदार को अथवा फैक्ट्री मालिक को, वह हमेशा मालिक के साथ मोल-भाव करता है, मजूरी के लिए उससे संघर्ष करता है।

परन्तु क्या एक मजदूर के लिए अकेले संघर्ष करना सम्भव है? मेहनतकश लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है: किसान तबाह हो रहे हैं तथा वे देहात से शहर या फैक्ट्री की ओर भाग रहे हैं। ज़मींदार तथा फैक्ट्री मालिक मशीनें लगा रहे हैं, जो मजदूरों को उनके काम से वंचित करती रही है। शहरों में बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है तथा गांवों में अधिकाधिक लोग भिखारी बनते जा रहे हैं; जो भूखे हैं, वे मजूरी के स्तर को निरन्तर नीचे पहुँचा रहे हैं। मजदूर के लिए अकेले मालिक से टक्कर लेना असम्भव हो जाता है। यदि मजदूर अच्छी मजूरी मांगता है अथवा मजूरी में कटौती से असहमत होने का प्रयत्न करता है, तो मालिक उसे बाहर निकल जाने के लिए कहता है, क्योंकि दरवाजे पर बहुत-से भूखे लोग खड़े होते हैं, जो कम मजूरी पर काम करने के लिए सहर्ष तैयार हो जाएंगे।

जब लोग इस हद तक तबाह हो जाते हैं कि शहरों और गांवों में बेरोज़गारों की हमेशा बहुत बड़ी तादाद रहती है, जब फैक्ट्री मालिक अथाह मुनाफे खसोटते हैं तथा छोटे मालिकों को करोड़पति बाहर धकेल देते हैं, तब व्यक्तिगत रूप से मजदूर पूँजीपति के सामने **सर्वथा असहाय** हो जाता है। तब पूँजीपति के लिए मजदूर को पूरी तरह कुचलना, दास मजदूर के रूप में उसे और निस्सन्देह अकेले उसे ही नहीं, वरन् उसके साथ उसकी पत्नी तथा बच्चों को भी मौत की ओर धकेलना सम्भव हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि हम उन व्यवसायों को लें, जिनमें मजदूर अभी तक कानून का संरक्षण हासिल नहीं कर सके हैं तथा जिनमें वे पूँजीपतियों का प्रतिरोध नहीं कर सकते, तो हम वहाँ असाधारण रूप से लम्बा कार्य-दिवस देखेंगे, जो कभी-कभी 17 से लेकर 19 घण्टे तक का होता है, हम 5 या 6 वर्ष के बच्चों को कमरतोड़ काम करते हुए देखेंगे, हम स्थाई रूप से ऐसे भूखे लोगों की एक पूरी पीढ़ी देखेंगे, जो धीरे-धीरे भूख के कारण मौत के मुँह में पहुँच रहे हैं। उदाहरण है वे मज़दूर, जो पूँजीपतियों के लिए अपने घरो पर काम करते हैं; इसके अलावा कोई भी मजदूर बीसियों दूसरे उदाहरणों को याद कर सकता है! दासप्रथा या भूदास प्रथा के अन्तर्गत भी मेहनतकश जनता का कभी इतना भयंकर उत्पीड़न नहीं हुआ, जितना कि पूँजीवाद के अन्तर्गत हो रहा है, जब मजदर प्रतिरोध नहीं कर पाते या ऐसे कानूनों का संरक्षण प्राप्त नहीं कर सकते, जो मालिकों की मनमानी कार्रवाइयों पर अंकुश लगाते हों।

इस तरह अपने को इस घोर दुर्दशा में पहुँचने से रोकने के लिए मजदूर व्यग्रतापूर्वक संघर्ष शुरू कर देते हैं। मजदूर यह देखकर कि उनमें से हर एक व्यक्तिगत तौर पर सर्वथा असहाय है तथा पूँजी का उत्पीड़न उसे कुचल डालने का खतरा पैदा कर रहा है, संयुक्त रूप से अपने मालिकों के विरुद्ध विद्रोह शुरू कर देते हैं। मजदूरों की हड़तालें शुरू हो जाती है। आरम्भ में तो मजदूर यह नहीं समझ पाते कि वे क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं, उनमें इस बात की चेतना का अभाव होता है कि वे अपनी कार्रवाई **किस वास्ते** कर रहे हैं: वे महज़ मशीनें तोड़ते हैं तथा फैक्ट्रियों को नष्ट करते हैं। वे फैक्ट्री मालिकों को महज़ मशीनें तोड़ते हैं तथा फक्ट्रियों को नष्ट करते हैं वे फैक्ट्री मालिकों को महज़ अपना रोष दिखाना चाहते हैं; वे अभी यह समझे बिना कि उनकी स्थिति इतनी असहाय क्यों हैं तथा उन्हें किस चीज़ के लिए प्रयास करना चाहिए, असह्य स्थिति से बाहर निकलने के लिए अपनी संयुक्त शक्ति की आज़माइश करते हैं।

तमाम देशों मे मजदूरों के रोष ने पहले छुटपुट विद्रोहों का रूप ग्रहण किया–रूस में पुलिस तथा फैक्ट्री मालिक उन्हें ''ग़दर'' के नाम से पुकारते हैं। तमाम देशों में इन छुटपुट विद्रोहों ने, एक ओर, कमोबेश शान्तिपूर्ण हड़तालों को और दूसरी ओर, अपनी मुक्ति के हेतु मजदूर वर्ग के चहुँमुखी संघर्ष को जन्म दिया।

मज़दूर वर्ग के संघर्ष के लिए हड़तालों (काम रोकने) का क्या महत्व है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें पहले हड़तालों की पूरी तसवीर हासिल करनी चाहिए। जैसा कि हम देख चुके हैं, मजदूर की मजूरी मालिक तथा मजदूर के बीच करार द्वारा निर्धारित होती है और यदि इन परिस्थितियों में निजी तौर पर मजदूर पूरी तरह असहाय है, तो ज़ाहिर है कि मजदूरों को अपनी मांगों के लिए संयुक्त रूप से लड़ना चाहिए, वे मालिकों को मजूरी घटाने से रोकने के लिए अथवा अधिक मजूरी हासिल करने के लिए हड़तालें संगठित करने के वास्ते बाध्य होते हैं। यह एक तथ्य है कि पूँजीवादी व्यवस्था वाले हर देश में मजदूरों की हड़तालें होती हैं। सर्वत्र, तमाम यूरोपीय देशों तथा अमेरिका में मजदूर ऐक्यबद्ध न होने पर अपने को असहाय पाते हैं; वे या तो हड़ताल करके या हड़ताल करने की धमकी देकर केवल संयुक्त रूप से ही मालिकों का प्रतिरोध कर सकते हैं। ज्यों-ज्यों पूँजीवाद का विकास होता जाता है, ज्यों-ज्यों बड़ी फैक्ट्रियाँ अधिकाधिक तीव्र गति से खुलती जाती हैं, ज्यों-ज्यों छोटे पूँजीपतियों को बड़े पूँजीपति बाहर धकेलते जाते हैं, मजदूरों द्वारा संयुक्त प्रतिरोध किए जाने की आवश्यकता त्यों-त्यों तात्कालिक होती जाती है, क्योंकि बेरोजगारी बढ़ती जाती है, पूँजीपतियों के बीच, जो सस्ती से सस्ती लागत पर अपना माल तैयार करने का प्रयास करते हैं (ऐसा करने के वास्ते उन्हें मजदूरों को कम से कम देना होगा), प्रतियोगिता तीव्र होती जाती है तथा उद्योग में उतार-चढ़ाव अधिक तीक्ष्ण तथा संकट

(शेष पृष्ठ 4 पर)

हड़ताल के विषय में..

(पृष्ठ 3 का शेष)

अधिक तीव्र होते जाते हैं। जब उद्योग फूलता-फलता है, फैक्ट्री मालिक बहुत मुनाफा कमाते हैं, परन्तु वे उसमें मजदूरों को भागीदार बनाने की बात नहीं सोचते। परन्तु जब संकट पैदा हो जाता है, तो फैक्ट्री मालिक नुकसान मजदूरों के मत्थे मढ़ने का प्रयत्न करते हैं। पूँजीवादी समाज में हड़तालों की आवश्यकता को यूरोपीय देशों में हर एक इस हद तक स्वीकार कर चुका है कि उन देशों में कानून हड़तालें संगठित किए जाने की मनाही नहीं करता; केवल रूस में ही हड़तालों के विरुद्ध बर्बर कानून अब भी लागू हैं (इन कानूनों और उनके लागू किए जाने के बारे में हम किसी और मौके पर बात करेंगे।)

कुछ भी हो, हड़तालें, जो ठीक पूँजीवादी समाज के स्वरूप के कारण जन्म लेती हैं, समाज की उस व्यवस्था के विरुद्ध मजदूर वर्ग के संघर्ष की शुरूआत की द्योतक होती हैं। अमीर पूँजीपतियों का अलग-अलग, सम्पत्तिहीन मजदूरों द्वारा सामना किया जाना मजदूरों के पूर्ण दास बनने का द्योतक होता है। परन्तु जब ये ही सम्पत्तिहीन मजदूर ऐक्यबद्ध हो जाते हैं, तो स्थिति बदल जाती है। यदि पूँजीपति ऐसे मजदूर नहीं ढूंढ़ पायें, जो अपनी श्रम-शक्ति को पूँजीपतियों के औज़ारों और सामग्री पर लगाने और नई दौलत पैदा करने के लिए तैयार हों, तो फिर कोई भी दौलत पूँजीपतियों के लिए लाभकर नहीं हो सकती। जब तक मजदूरों को पूँजीपतियों के साथ निजी आधार पर संबंध रखना पड़ता है, वे ऐसे वास्तविक दास बने रहते हैं, जिन्हें रोटी का एक टुकड़ा हासिल कर सकने के लिए दूसरे को लाभ पहुँचाने के वास्ते निरन्तर काम करना होगा, जिन्हें हमेशा आज्ञाकारी तथा मूक उजरती नौकर बना रहना होगा। परन्तु जब मजदूर संयुक्त रूप में अपनी मांग पेश करते हैं और थैलीशाहों के आगे झुकने से इन्कार करते हैं, तो वे दास नहीं रहते, वे इन्सान बन जाते हैं, वे यह मांग करने लगते हैं कि उनके श्रम से मुट्ठीभर परजीवियों का ही हितसाधन नहीं होना चाहिए, अपितु उसे इन लोगों को भी, जो काम करते हैं, इन्सानों की तरह जीवन-यापन करने में सक्षम बनाना चाहिए। दास स्वामी बनने की मांग पेश करने लगते हैं–वे उस तरह काम करना और रहना नहीं चाहते, जिस तरह जमींदार और पूँजीपति चाहते हैं, बल्कि वे उस तरह काम करना और रहना चाहते हैं, जिस तरह स्वयं मेहनतकश जन चाहते हैं। हड़तालें इसलिए पूँजीतियों में सदा भय पैदा करती हैं कि वे उनकी प्रभुता पर कुठाराघात करती हैं। जर्मन मजदूरों का एक गीत मजदूर वर्ग के बारे में कहता है: ''यदि चाहें तुम्हारी बलशाली भुजाएं, हो जाएंगे सारे चक्के जाम''। और यह एक वास्तविकता है: फैक्ट्रियाँ, जमींदार की जमीन, मशीनें, रेलें आदि सब एक विराट यन्त्र के चक्के की तरह हैं, उस यन्त्र की तरह, जो विभिन्न उत्पाद हासिल करता है, उनका प्रसंस्करण करता है तथा निर्दिष्ट स्थान को भेजता है। इस पूरे यन्त्र को गतिमान करता है मजदूर, जो खेत जोतता है, खानों से खनिज पदार्थ निकालता है, फैक्ट्रियों में माल तैयार करता है, मकानों, वर्कशापों और रेलों का निर्माण करता है। जब मजदूर काम करने से इन्कार कर देते हैं, इस पूरे यन्त्र के ठप्प होने का खतरा पैदा हो जाता है। हर एक हड़ताल पूँजीपतियों को याद दिलाती है कि वे नहीं, वरन् मजदूर, वे मजदूर वास्तविक स्वामी हैं, जो अधिकाधिक ऊँचे स्वर में अपने अधिकारों की घोषणा कर रहे हैं। हर एक हड़ताल मजदूरों को याद दिलाती है कि उनकी स्थिति असहाय नहीं है, कि वे अकेले नहीं हैं। ज़रा देखें कि हड़तालों का स्वयं हड़तालियों पर तथा किसी पड़ोस की या नज़दीक की फैक्ट्रियों में या एक ही उद्योग की फैक्ट्रियों में काम करनेवाले मजदूरों दोनों पर कितना जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। सामान्य, शान्तिपूर्ण समय में मजदूर बड़बड़ाहट किए बिना अपना काम करता है, मालिक की बात का प्रतिवाद नहीं करता, अपनी हालत पर बहस नहीं करता। हड़तालों के समय वह अपनी मांगें ऊँची आवाज में पेश करता है, वह मालिकों को उनके सारे दुर्व्यवहारों की याद दिलाता है, वह अपने अधिकारों का दावा करता है, वह केवल अपने और अपनी मजूरी के बारे में ही नहीं सोचता, वरन् अपने सारे साथियों के बारे में सोचता है, जिन्होंने उसके साथ-साथ औज़ार नीचे रख दिए हैं और जो तकलीफों की परवाह किए बिना मजदूरों के ध्येय के लिए उठ खड़े हुए हैं। मेहनतकश जनों के लिए प्रत्येक हड़ताल का अर्थ है बहुत सारी तकलीफें, भयंकर तकलीफें, जनकी तुलना केवल युद्ध की विभीषिकाओं से ही की जा सकती है–भूखे परिवार, मजूरी से हाथ धो बैठना, अक्सर गिरफ्तारियाँ, शहरों से भगा दिया जाना, जहाँ उनके घर-बार होते हैं तथा वे रोजगार पर लगे होते हैं। इन तमाम तकलीफों के बावजूद मजदूर उनसे घृणा करते हैं, जो अपने साथियों को छोड़कर भाग जाते हैं तथा मालिकों के साथ सौदेबाज़ी करते हैं। हड़तालों द्वारा प्रस्तुत इन सारी तकलीफों के बावजूद पड़ोस की फक्ट्रियों के मजदूर उस समय नया साहस प्राप्त करते हैं, जब वे देखते हैं कि उनके साथी संघर्ष में जुट गए हैं। अंग्रेज़ मजदूरों की हड़तालों के बारे में समाजवाद के महान शिक्षक एंगेल्स ने कहा था: ''जो लोग एक बुर्जुआ को झुकाने के लिए इतना कुछ सहते हैं, वे पूरे बुर्जुआ वर्ग की शक्ति को चकनाचूर करने में समर्थ होंगे।'' बहुधा एक फैक्ट्री में हड़ताल अनेकानेक फैक्ट्रियों में हड़तालों की तुरन्त शुरूआत के लिए पर्याप्त होती है। हड़तालों का कितना बड़ा नैतिक प्रभाव पड़ता है, कैसे वे मजदूरों को प्रभावित करती हैं, जो देखते हैं कि उनके साथी दास नहीं रह गए हैं और, भले ही कुछ समय के लिए, उनका और अमीर का दर्जा बराबर हो गया है! प्रत्येक हड़ताल समाजवाद के विचार को, पूँजी के उत्पीड़न से मुक्ति के लिए पूरे मजदूर वर्ग के संघर्ष के विचार को बहुत सशक्त ढंग से मजदूर के दिमाग में लाती है। प्राय: होता यह है कि किसी फैक्ट्री या किसी उद्योग की शाखा या शहर के मजदूरों को हड़ताल के शुरू होने से पहले समाजवाद के बारे में पता ही नहीं होता और उन्होंने उसकी बात कभी सोची ही नहीं होती। परन्तु हड़ताल के बाद अध्ययन मण्डलियाँ तथा संस्थाएं उनके बीच अधिक व्यापक होती जाती हैं तथा अधिकाधिक मजदूर समाजवादी बनते जाते हैं।

हड़ताल मजदूरों को सिखाती है कि मालिकों की शक्ति तथा मजदूरों की शक्ति किसमें निहित होती है; वह उन्हें केवल अपने मालिक और केवल अपने साथियों के बारे में ही नहीं, वरन् तमाम मालिकों, पूँजीपतियों के पूर वर्ग, मजदूरों के पूरे वर्ग के बारे में सोचना सिखाती है। जब किसी फैक्ट्री का मालिक, जिसने मजदूरों की कई पीढ़ियों के परिश्रम के बल पर करोड़ों की धनराशि जमा की है, मजूरी में मामूली वृद्धि करने से इन्कार करता है, इतना ही नहीं, उसे घटाने का प्रयत्न तक करता है और मजदूरों द्वारा प्रतिरोध किए जाने की दशा में हजारों भूखे परिवारों को सड़कों पर धकेल देता है, तो मजदूरों के सामने यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि पूँजीपति वर्ग समग्र रूप में समग्र मजदूर वर्ग का दुश्मन है और मजदूर केवल अपने ऊपर और अपनी संयुक्त कार्रवाई पर ही भरोसा कर सकते हैं। अक्सर होता यह है कि फैक्ट्री का मालिक मजदूरों की आंखों में धूल झोंकने, अपने को उपकारी के रूप में पेश करने, मजदूरों के आगे रोटी के चन्द छोटे-मोटे टुकड़े फेंककर या झूठे वचन देकर उनके शोषण पर पर्दा डालने के लिए भरसक प्रयास करता है। हड़ताल मजदूरों को यह दिखाकर कि उनका ''उपकारी'' तो भेड़ की खाल ओढ़े भेड़िया है, इस धोखाधड़ी को एक ही वार में ख़त्म कर देती है।

इसके अलावा हड़ताल पूँजीपतियों के ही नहीं, वरन् सरकार तथा कानूनों के भी स्वरूप को मजदूरों की आंखों के सामने स्पष्ट कर देती है। जिस तरह फैक्ट्रियों के मालिक अपने को मजदूरों के उपकारी के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं, ठीक उसी तरह सरकारी अफसर और उनके चाटुकार मजदूरों को यह यकीन दिलाने का प्रयत्न करते हैं कि ज़ार तथा ज़ारशाही सरकारी न्याय की अपेक्षानुसार फैक्ट्रियों के मालिकों तथा मजदूरों दोनों का समाज रूप से ध्यान रखते हैं। मजदूर कानून नहीं जानता, उसका सरकारी अफसरों, खास तौर पर ऊँचे पदाधिकारियों के साथ सम्पर्क नहीं होता, फलस्वरूप वह अक्सर इन सब बातों पर विश्वास कर लेता है। इतने में हड़ताल होती है। सरकारी अभियोजक, फैक्ट्री इन्स्पेक्टर, पुलिस और कभी-कभी सैनिक कारखाने में आ धमकते हैं। मजदूरों को पता चलता है कि उन्होंने कानून तोड़ा है: मालिकों को कानून इकट्ठा होने और मजदूरों की मजूरी घटाने पर खुलेआम विचार-विमर्श करने की अनुमति देता है। परन्तु मजदूर अगर कोई संयुक्त करार करते हैं, तो उन्हें अपराधी घोषित किया जाता है! मजदूरों को उनके घरों से बेदखल किया जाता है, पुलिस उन दुकानों को बन्द कर देती है, जहाँ से मजदूर खाने-पीने की चीजें उधार ले सकते हैं, उस समय भी जब मजदूर का आचरण शान्तिपूर्ण होता है, सैनिकों को उनके खिलाफ भड़काने का प्रयत्न किया जाता है। सैनिकों को उनके खिलाफ भड़काने का प्रयत्न किया जाता है। सैनिकों को मजदूरों पर गोली चलाने का आदेश दिया जाता है और जब वे भागती भीड़ पर गोली चलाकर निहत्थे मजदूरों को मार डालते हैं, तो ज़ार स्वयं सैनिकों के प्रति आभार-प्रदर्शन करता है (इस तरह ज़ार ने 1895 में यारोस्लाव्ल में हड़ताली मजदूरों की हत्या करनेवाले सैनिकों को धन्यवाद दिया था)। हर मजदूर के सामने यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ज़ारशाही सरकार उसकी सबसे बड़ी शत्रु है, क्योंकि वह पूँजीपतियों की रक्षा करती है तथा मजदूरों के हाथ-पांव बांध देती है। मजदूर यह समझने लगते हैं कि कानून केवल अमीरों के हितार्थ बनाए जाते हैं, कि सरकारी अधिकारी उनके हितों की रक्षा करते हैं, कि मेहनतकश जनता की ज़बान बन्द कर दी जाती है, उसके इस बात की अनुमति नहीं दी जाती कि वह अपनी मांगें पेश करे, कि मजदूर वर्ग को हड़ताल करने का अधिकार, मजदूर समाचारपत्र प्रकाशित करने का अधिकार, कानून बनानेवाली और कानूनों को लागू करने के कार्य की देखरेख करनेवाली राष्ट्रीय असेम्बली में भाग लेने का अधिकार अवश्य हासिल करना होगा। सरकार खुद अच्छी तरह जानती है कि हड़तालें मजदूरों की आंखें खोलती हैं और इस कारण वह हड़तालों से डरती है तथा उन्हें यथाशीघ्र रोकने का प्रयत्न करती है। एक जर्मन गृहमंत्री ने, जो समाजवादियों तथा वर्ग-सचेत मजदूरों को निरन्तर सताने के लिए बदनाम था, जन प्रतिनिधियों के सामने यह अकारण ही नहीं कहा था: ''हर हड़ताल के पीछे क्रान्ति का कई फनोंवाला सांप (दैत्य) होता है''; प्रत्येक हड़ताल मजदूरों में इस समझदारी को दृढ़ बनाती तथा विकसित करती है कि सरकार उनकी दुश्मन है तथा मजदूर वर्ग को जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष करने के वास्ते अपने को तैयार करना चाहिए।

अत: हड़तालें मजदूरों को ऐक्यबद्ध होना सिखाती हैं; उन्हें बताती हैं कि वे केवल ऐक्यबद्ध होने पर ही पूँजीपतियों के विरुद्ध संघर्ष कर सकते हैं; हड़तालें मजदूरों को कारखानों के मालिकों के पूरे वर्ग के विरुद्ध, स्वेच्छाचारी, पुलिस सरकार के विरुद्ध पूरे मजदूर वर्ग के संघर्ष की बात सोचना सिखाती हैं। यही कारण है कि समाजवादी लोग हड़तालों को ''युद्ध का विद्यालय'', ऐसा विद्यालय कहते हैं, जिसमें मजदूर पूरी जनता को, श्रम करनेवाले तमाम लोगों को सरकारी अधिकारियों के जुए से, पूँजी के जुए से मुक्त करने के लिए अपने दुश्मनों के खिलाफ युद्ध करना सीखते हैं।

परन्तु ''युद्ध का विद्यालय'' स्वयं युद्ध नहीं है। जब

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती देश भर में जोश–खरोश से मनाई गई

जोया (उ.प्र.) : ऑल इण्डिया डीवाईओ की ओर से जेपी नगर जिला में गजरौला के अमन स्कूल में सभा करके 23 जनवरी को भारतीय आजादी आन्दोलन के महानायक एवं क्रान्तिकारी योद्धा, नेताजी जयंती जोश-खरोश से मनाई गई। सभा की अध्यक्षता स्कूल प्रबंधक अख्तर साहब ने की। संचालन एआईडीवाईओ के नासिर भाई ने किया। सभा के मुख्य वक्ता थे एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जेपी नगर जिला इन्चार्ज कॉ. शील कुमार। कॉ. गंभीर सिंह, राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, राजेन्द्र सिंह गजरौला ने भी अपने विचार रखे। बच्चों ने क्रान्तिकारी गीत गाये।

ढकवा, प्रतापगढ़(उ.प्र.) : 23 जनवरी को आजादी आन्दोलन के गैर समझौतावादी धारा के महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 116वीं जयन्ती डा. बी आर अम्बेडकर शिक्षण संस्थान ढकवा में विद्यालय और एआईडीवाईओ के संयुक्त तत्वावधान में मनाई गयी। भयंकर ठण्ड और कुहासे के बावजूद छोटे-छोटे बच्चे ठीक समय पर कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहुँच गये। ढकवा बाजार में नारे लगाते हुए उत्साहित बच्चों के द्वारा माँग पट्टिकाओं के साथ निकाले गये बहुत ही अनुशासित व सुसज्जित जुलूस को देखकर लोग दंग रह गये। जुलूस विद्यालय से निकल कर चौराहे, जौनपुर रोड, प्रतापगढ़ रोड और सुलतानपुर रोड होते हुए सभा स्थल पहुँचा। विद्यालय में हुई सभा की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री संजय कुमार ने की। सभा की शुरूआत नेताजी के चित्र पर पुष्पान्जलि अर्पित करने के साथ हुई। बच्चों ने क्रान्तिकारी गीत, हिन्दी-अंग्रेजी में भाषण प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे एआईडीवाईओ के राज्य कोषाध्यक्ष कॉ. प्रमोद कुमार शुक्ल। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि जनता के ऊपर राज्य तथा केन्द्र सरकारों द्वारा बेरहमी से शोषण आजादी के मिलने के बाद से ही जारी है। जब तक क्रान्ति के जरिए इस पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म नहीं किया जायेगा तब तक जनता को खुशहाली नहीं मिल पायेगी। उन्होंने जोरदार जुझारू जनआन्दोलन खड़ा करने की जरूरत पर उन्होंने बल दिया।

सभा को एआईकेकेएमएस के प्रतापगढ़ जिलाध्यक्ष कॉ. शेषनाथ तिवारी, लक्ष्मणपुर इण्टर कालेज प्रतापगढ़ के पूर्व प्रधानाचार्य श्री के. पी. पाण्डेय ने भी संबोधित किया। सभा का संचालन कॉ. यशवन्त राव ने किया। अध्यक्षीय भाषण के साथ सभा का समापन हुआ।

बडोदरा (गुजरात): 23 जनवरी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की समझौताहीन संघर्ष की धारा के महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाष चन्द्र की जयन्ती पर एआईडीएसओ द्वारा विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। शुरूआत में नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम में एमएस यूनिवर्सिटी के छात्रों एवं शिक्षकों सहित आम नागरिकों ने भाग लिया। सभा को एसयूसीआई(सी) के वडोदरा सचिव कॉ. तपन दासगुप्ता ने सम्बोधित किया। उपस्थित छात्रों ने महिलाओं की सुरक्षा और उनकी मान-मर्यादा की रक्षा करने की शपथ ली।

सूरत: 23 जनवरी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस' की जयन्ती पर ऑल इण्डिया डीवाइओ द्वारा रैली निकाली गई एवं युवा-मजदूर सम्मेलन किया गया। रैली मजुरा गेट से नवसारी गोपीपुरा होते हुए चौक पहुँची। रास्ते में सुभाष चौक पर नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। सुभाष चौक वह स्थल है जहाँ हरीपुरा अधिवेशन में अध्यक्ष बनने के समय सुभाष बाबू रुके थे। चौक पर रैली सभा में तब्दील हो गई। कांजीभाई देसाई हॉल में युवा-मजदूर सम्मेलन हुआ।

सम्मेलन की अध्यक्षता एआईडीवाईओ के सूरत जिला अध्यक्ष कॉ. भीखाभाई प्रजापति ने की। सभा की शुरूआत नेताजी के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुई। कॉ. सत्येन्द्र सिंह ने प्रथम वक्तव्य देते हुए दिल्ली में हुए जघन्य सामूहिक बलात्कार की भर्त्सना की तथा अपराधियों को उदाहरणमूलक सजा की मांग की। सम्मेलन में उपस्थित तमाम लोगों ने एसयूसीआई(सी) द्वारा जारी शपथ पत्र को पढ़ते हुए प्रतिज्ञा की। कॉ. मुकेश सेमवाल ने विस्तार से नेताजी के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉ. प्रभाष घोष की अपील पढ़कर सुनाई गई। सभा का सफल संचालन कॉ. सुरेश मौर्या ने किया। मुख्य वक्ता के रूप मे कॉ. जयेश पटेल ने अपने विचार रखे।

छात्रों को सम्बोधित करते हुए एआईडीएसओ के राज्य सचिव कॉ. भाविक राजा

अहमदाबाद : 23 जनवरी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की याद में वडोदरा, सूरत आदि के साथ-साथ अहमदाबाद में भी गुजरात यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के प्रांगण में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रों ने दिल्ली सहित देश भर में बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के खिलाफ संघर्ष करने का संकल्प लिया। शुरूआत में डीएसओ की अहमदाबाद जिला कमेटी के अध्यक्ष कॉ. सचिन शाह ने नेताजी की छवि पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। संगठन के राज्य सचिव कॉ. भाविक राजा ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। सुबह सुभाष ब्रिज सर्कल पर नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

भिवानी(हरियाणा) : 23 जनवरी को आजादी आन्दोलन के गैर समझौतावादी धारा के महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती नेहरू पार्क में एआईडीएसओ और एआईडीवाईओ के संयुक्त तत्वावधान में यादगार सभा कर मनाई गयी। सभा की अध्यक्षता एआईडीएसओ के जिला अध्यक्ष कॉ. रूपेश कुमार ने की। सभा की शुरूआत नेताजी के चित्र पर पुष्पान्जलि अर्पित करने के साथ हुई। छात्रों ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के जिला सचिव कॉ. रामफल ने अपने सम्बोधन में कहा कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस बगावत, बहादुरी, कुर्बानी, हिम्मत-हौंसले, दिलेरी और देशभक्ति की बेजोड़ मिसाल पेश कर गये। सही विचारधारा, सही रास्ता और उन्नत नीति-नैतिकता ही हर जमाने के महापुरुषों की शक्ति का स्रोत रहा है। नेताजी सुभाष भी अपने जमाने में साम्राज्यवादी शोषण-जुल्म के खिलाफ देश के आजादी आन्दोलन के आदर्श, दृष्टिकोण व संस्कृति के आधार पर संघर्ष करते हुए ही एक बड़े इन्सान बन पाये थे। उनकी जयंती पर उन्हें सादर याद करना, उनके चरित्र के महत्वपूर्ण पहलुओं से जनता को वाकिफ कराना और उनके जीवन-संघर्ष से सीख लेना बेहद जरूरी है ताकि वर्तमान में अपना फर्ज निभाने लायक बनने के लिए हम उन्नत नैतिक स्तर हासिल कर सकें। आजादी के 65 साल बाद भी बेरहमी से पूँजीवादी शोषण-दमन जारी है, यहां तक कि महिलाओं की इज्जत-आबरू भी सुरक्षित नहीं है। शोषणमुक्त समाज बनाने का उनका सपना आज भी अधूरा है। इस पूँजीवादी व्यवस्था को क्रान्ति के जरिए खत्म किये बिना शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती। उन्होंने नेताजी से प्रेरणा लेकर हर तरह के अन्याय के खिलाफ संघर्ष छेड़ने का आह्वान किया।

दुर्ग (छ.गढ़): 23 जनवरी का एआईडीएसओ साइन्स कॉलेज कमेटी द्वारा आजादी आन्दोलन के महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती पूरे सम्मान के साथ साइन्स कॉलेज में मनायी गयी। प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं को नेताजी सुभाष का बैच पहनाया गया। सर्वप्रथम नेताजी के फोटो पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात् छात्रों को संबोधित करते हुए एआईडीएसओ के राज्य संयोजक कॉमरेड आत्माराम साहू ने कहा कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जीवन-संघर्ष आज भी छात्रों-युवाओं के लिए प्रासंगिक व प्रेरणादायक है। आज भी देश में महंगाई, गरीबी, भुखमरी, शोषण, अन्याय, अश्लीलता, नशाखोरी, नैतिक पतन, शिक्षा-स्वास्थ्य की समस्या आम जनता, छात्र-नौजवानों, मजदूर-किसानों के समक्ष विकराल रूप में खड़ी है। इसके खिलाफ संगठित और वैज्ञानिक विचारों से लैस होकर लड़ना होगा। कार्यक्रम का संचालन मेहन्द्र साहू द्वारा किया गया।

एआईडीएसओ का नगर छात्र सम्मेलन

दिल्ली: एआईडीएसओ की बुराड़ी इकाई औ गुलाबी बाग इकाई का छात्र सम्मेलन 30 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। सभा में विभिन्न स्कूलों से कई छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। शुरूआत में दिल्ली गैंगरेप की पीड़ित छात्रा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए एआईडीएसओ के दिल्ली राज्याध्यक्ष कॉ. भास्करानन्द ने छात्रों को सरकार की तमाम शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ सशक्त छात्र-आन्दोलन के साथ-साथ सही सांस्कृतिक आन्दोलन खड़ा करने की भी अपील की। दोनों जगह सम्मेलन में 10 सदस्यीय कमेटी गठित की गई। बुराड़ी सम्मेलन का संचालन एआईडीएसओ दिल्ली राज्य कमेटी के कार्यालय सचिव कॉ. राहुल सरकार और गुलाबी बाग सम्मेलन का संचालन दिल्ली राज्य कमेटी के सचिव कॉ. प्रशांत कुमार ने किया।

एआईयूटीयूसी.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

फेंकना है, जब तक पार्टी एक नई संस्कृति से, सर्वहारा क्रान्ति की धारणाओं पर आधारित एक नई जीवन शैली से, सर्वहारा वर्ग स्वार्थ, सर्वहारा वर्ग चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कृति के आधार पर अपने आपको सुदृढ़ नहीं कर लेती यह तब तक इसे नहीं उखाड़ फेंक पाएगी; अगर यह उत्पादन के साधनों पर निजी मालिकाने जैसा कि पूँजीवाद में होता है, की बजाय उत्पादन के साधनों पर समाजवादी मालिकाने के विचार से, समाजवादी संस्कृति से मजदूरों को लैस नहीं करती, तो क्रान्ति की अगुआई नहीं कर सकती। अगर उस ताकत, उस पार्टी और उसकी ट्रेड यूनियन के भी नेता-कार्यकर्ता सर्वहारा संस्कृति पर अमल करने की बात नहीं करते, व्यक्तिवाद के खिलाफ लड़ने की बात नहीं करते, सामाजिक मालिकाने और निर्वैयक्तिक संस्कृति यानी कम्युनिस्ट संस्कृति, सर्वहारा संस्कृति के लिए लड़ने की बात नहीं करते, सर्वहारा वर्ग की संस्कृति और सर्वहारा वर्ग की पार्टी की बात नहीं करते, इस संस्कृति से वे लैस नहीं हो जाते और इसे अपने जीवन में वे अमल में नहीं लाते, तो वे क्रान्ति नहीं कर सकते। मजदूर वर्ग संस्कृति और नीति-नैतिकता पर विकसित होने वाली, नई नीति-नैतिकता के बिना जनवादी आन्दोलन भी महान नहीं हो सकता है। यही कहना काफी नहीं है कि महज पूँजीवाद की वजह से भ्रष्टाचार बढ़ रहा है या अपराध बढ़ रहे हैं। हाँ, सभी तरह के शोषण का मूल कारण पूँजीवाद है, लेकिन सोचने-विचारने के लिए फिर भी बहुत कुछ है। बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यबोध जो किसी दिन बहुत ही प्रगतिशील और क्रान्तिकारी थे जैसे कि फ्रांसीसी क्रान्ति या अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम या इंग्लैण्ड, जर्मनी या इटली की औद्योगिक क्रान्ति के दौरान थे, जिन्होंने एक समय समाज और सामाजिक प्रगति के लिए लोगों को अपनी जान कुर्बान करने के लिए प्रेरित किया था, अब वे निश्शेष हो चुके हैं। अगर इन बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यों की राख पर एक नई संस्कृति विकसित नहीं की गई, तो नई सभ्यता का निर्माण नहीं किया जा सकता। मजदूर आन्दोलन पूँजीवादी शोषण-उत्पीड़न के निश्चित तौर पर ही खिलाफ है; निस्संदेह यह मूल बात है। लेकिन मजदूर आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत इसलिए है कि एक नई सभ्यता का सृजन करना है और जीवन की एक नई धारणा, नई संस्कृति और नीति-नैतिकता की नई धारणा पर ही एक नई सभ्यता का उदय हो सकता है। पुराना नैतिकता बोध मरता जा रहा है। इसलिए कोई नैतिक विवेक नहीं रहा है, कोई नैतिक संकोच नहीं रहा है; महिलाओं के प्रति कोई कुछ भी अपराध कर सकता है, कोई किसी की भी सम्पत्ति हड़प सकता है, किसी का भी पैसा हड़प सकता है; इसलिए भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, अपराध बढ़ रहे हैं। इन सबका मुकाबला एक ऐसी ताकत से ही किया जा सकता है जो नई सर्वहारा संस्कृति, नई नीति-नैतिकता से लैस हो; केवल तभी किया जा सकता है जब आन्दोलन इस नई नीति-नैतिकता और संस्कृति पर आधारित हो। ऐसा सांस्कृतिक आन्दोलन महज किसी व्यक्ति का ही मामला नहीं है। मजदूर वर्ग यकीनन अपने आर्थिक अधिकारों, राजनैतिक अधिकारों के लिए लड़ेगा, लेकिन इसे एक नई संस्कृति, एक नई सभ्यता के लिए भी लड़ना होगा जिसका सृजन केवल सर्वहारा वर्ग, मजदूर वर्ग ही कर सकता है। इसलिए मार्क्स ने बहुत अर्सा पहले दिखाया था कि मजदूर इस दुनिया को बदल सकते हैं और केवल मजदूर ही दुनिया को बदलेंगे लेकिन दुनिया को बदलने के लिए पहले मजदूरों को खुद को बदलना होगा। वे एक पूँजीवादी समाज में पैदा हुए हैं। स्वाभाविक है कि वे पतित बुर्जुआ समाज के दुर्गुण, गंदी सोच-संस्कृति हासिल कर लेते हैं। इसलिए मजदूरों को अगर एक नई सभ्यता में पदार्पण करना है तो उन्हें इस भोण्डी संस्कृति के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष करना होगा।

हमारे संगठन का लक्ष्य वही है और यह महान मार्क्सवादी चिन्तक और दार्शनिक और मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन और माओ त्से-तुंग के महान शिष्य कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन से मार्गदर्शित हैं। यह इस संगठन की महानता है और हमारे देश की बाकी सब ट्रेड यूनियनों से इसका अन्तर है। आज मजदूरों को इसे समझना होगा, इसे पहचानना होगा, हमें संगठन को मजबूत करना होगा। उन्हें इस बात का अहसास करना होगा कि जब कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं पर विकसित होगा, केवल तभी न केवल हमारे देश में बल्कि पूरी दुनिया में आन्दोलन बढ़ सकेगा, केवल तभी एक दिन यह उनकी मुक्ति लाएगा। कॉमरेड शिवदास घोष का चिन्तन इस तरह विश्व मजदूर वर्ग आन्दोलन में सब जगह फैला देना होगा। मेरा विश्वास है कि हमारे सभी सदस्य, यकीनन नेता और कार्यकर्ता, यहाँ तक कि हमारे सभी समर्थक भी कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन से लैस होकर नई संस्कृति को व्यापक पैमाने पर मजदूरों में फैलाने के लिए ले जाएंगे। इस पर उन्हें संगठित करेंगे और नई सभ्यता का निर्माण करेंगे जिसमें नई संस्कृति पूरी तरह से उभरेगी, बढ़ेगी, तब इस देश में महिलाएँ सचमुच सुरक्षित होंगी, वे सच्ची मान-मर्यादा के साथ जी सकेंगी, महिलाएँ, यहाँ तक कि उत्पीड़ित जनता भी जिसकी इज्जत नहीं की जाती है, बल्कि उल्टे जिन्हें नीची निगाह से देखा जाता है, नये जीवन को मान-सम्मान से जी सकेंगी। सभी कॉमरेड इस मूल संघर्ष की अहमियत के मद्देनजर इस बात को गहराई से समझेंगे। इसी उम्मीद के साथ में अपनी बात समाप्त करता हूँ। दुनिया का मजदूर आन्दोलन जिन्दाबाद! ऑल इण्डिया यूनाइटेड यूनियन सेण्टर जिन्दाबाद! पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति जिन्दाबाद!! सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!!!

कॉ. शंकर शाहा का भाषण

ऑल इण्डिया यूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने कहा कि ऑल इण्डिया यूटीयूसी कश्मीर से कन्याकुमारी तक 22 राज्यों में, अलबत्ता असमान विकास के साथ काम कर रही है। अत: उन सब राज्यों से प्रतिनिधि यहाँ हैं। वरिष्ठ सदस्य उन दिनों को याद करते हैं जब कॉमरेड शिवदास घोष के नेतृत्व में धनबाद धर्मशाला में 1969 में संगठन का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। अब जितने प्रतिनिधियों की मांग राज्यों द्वारा की गई है उन सब को ठहराने की जगह की व्यवस्था करने में मुश्किलें आड़े आ रही हैं। कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन से लैस संगठन की लहर उमड़ पड़ने को है। हमने अहसास कर लिया है कि कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के बिना मजदूर वर्ग की मुक्ति सम्भव नहीं है। न केवल हमारे देश, बल्कि दुनिया के मजदूरों को क्रान्ति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन का खजाना सौंप दिया है।

कॉमरेड लेनिन ने दिखाया था कि ट्रेड यूनियन को संशोधनवाद, व्यक्तिवाद, अर्थवाद से मुक्त करने के लिए सर्वहारा को ट्रेड यूनियन में शामिल होना चाहिए। कॉमरेड शिवदास घोष के योग्यतम शिष्य कॉमरेड नीहार मुखर्जी ने नवजीवन संचार और सुदृढ़ीकरण के अपने आह्वान में हमसे, ट्रेड यूनियन संगठकों से लाखों लाख मजदूरों को सही दिशा में नेतृत्व देने के लिए अपने अन्दर नई जान फूँकने, खुद को बदलने और तैयार करने, खुद को नेता बनने के लायक बनाने का आग्रह किया था। मजदूर बहुत बड़ी संख्या में हमारे पास आ रहे हैं, हमारा सहारा लेना चाह रहे हैं, लेकिन यह मानना होगा कि उनके पास भेजने, उन्हें संगठित करने, मजदूरों की उन यूनियनों की देखभाल करने के लिए हमारे पास पर्याप्त संख्या में नेता-कार्यकर्ता नहीं हैं।

इसके बाद कॉमरेड साहा ने ठेका मजदूरों की दुर्दशा पर रोशनी डाली। बड़ी-बड़ी स्टील फैक्ट्रियों कोयला खदानों, सरकारी दफ्तरों, केन्द्र सरकार के कार्यालयों, यहाँ तक कि हमारे प्रधानमंत्री के क्वार्टरों में भी यही स्थिति है। सर्वोपरि, पूँजीवादी मालिक मनमाने ढंग से मजदूरों को लगाने और हटाने (हायर एण्ड फायर) के पूर्ण और निरंकुश अधिकार का आनन्द लेने के लिए कानून को बदलवाना चाहते हैं। केन्द्रीय ट्रेड यूनियन नेताओं ने इस कदम का विरोध किया, जबकि सरकार ने यह एलान करने के लिए मालिकों से हाथ मिला लिये कि नौकरियों का कोई स्थायीत्व नहीं होगा, मजदूरों को किसी एक खास ठेके के लिए लगाए और हटाए जाने के लिए तैयार रहना होगा। आईएलओ के कन्वेन्शन न. 87 और 98 को भारत मान्यता नहीं देता है, जो यूनियन बनाने के अधिकार और सामूहिक सौदेबाजी करने के अधिकार की गारण्टी करता है। फिलहाल जानकारी दी गई है कि मालिकों के खिलाफ हड़ताल करने के अधिकार को रद्द करने हुए आईएलओ के नियमन कानून में संशोधन हो सकता है। लेकिन हम इन अधिकारों के बल पर नहीं खड़े हैं, हम प्रतिवाद करने और आगे बढ़ने के मजदूरों के अन्तर्निहित, न्यायोचित अधिकार पर भरोसा करते हैं। यह अधिकार उनसे कोई नहीं छीन सकता और कानून के पोथे इसमें कम से कम कर सकते हैं। कॉमरेड साहा ने उम्मीद जताई कि ऐसे एक संशोधन का जवाब एक विश्व स्तरीय दुनियाव्यापी आम हड़ताल से दिया जाएगा।

कॉमरेड के. राधाकृष्ण का भाषण

सम्मेलन के लिए देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों और विदेश से आए बिरादराना प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए ऑल इण्डिया यूटीयूसी के उपाध्यक्ष कॉमरेड के. राधाकृष्ण ने दिखाया कि सभी क्षेत्रों और उद्योगों से, असंगठित या संगठित क्षेत्र के हजारों-हजार मजदूर, आशा कर्मी, आंगनबाड़ी वर्कर, अच्छा वेतन पाने वाले और खराब वेतन पाने वाले हर तरह के कर्मचारी, ठेका-अनुबंध के आधार पर लगे या इन्सेन्टिव पर लगे मजदूर-कर्मचारी सभी एक ही लक्ष्य लेकर, शोषण को खत्म करने के एक ही मकसद को लेकर लाल झण्डे-बैनर उठाए हुए देश के कोने-कोने से आकर बंगलुरू में इकट्ठे हुए हैं। कॉमरेड राधाकृष्ण ने यह भी कहा कि 1947 से खुशहाली और विकास के पूँजीवादी शासकों द्वारा दिए गए तमाम थोथे आश्वासनों की तरह, कांग्रेस-नीत केन्द्र सरकार का दिया यह ताजातरीन नारा कि एफडीआई खुशहाली की गारण्टी करेगी एक ऐसा ही झूठा झांसा है। यह इसलिए कि समस्याओं की जड़ कुछ नीतियाँ या शासकों की अदला-बदला नहीं, बल्कि समस्या की जड़ यह मरता हुआ पूँजीवादी व्यवस्था है। यह मुट्ठीभर पूँजीपति को अमीर से अमीर होने और करोड़ों लोगों को कंगाल होने देती है। समाजवादी क्रान्ति के लिए पूँजीवाद के खिलाफ लड़ना पूरे देश के तमाम मजदूरों की एकता ही आज वक्त का तकाजा है।

शासक हमेशा मेहनतकश जनता की उस एकता को तोड़ने की कोशिश करते हैं, यह उनके लिए खतरा है। लेकिन सबसे अहम बात जो एआईयूटीयूसी के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें सिखायी थी वह यह है कि शासक वर्ग अब राष्ट्र की नैतिक-सांस्कृतिक रीढ़ को तोड़ डालने की कोशिश कर रहा है, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि भूखे, अधभुखे, गरीब, बेरोजगार शोषित लोग अपने अधिकारों के लिए लड़ने को उठ खड़े हो सकते हैं बशर्ते कि उनका नैतिक, सांस्कृतिक और नीतिपरक मान अटूट रहे।

हाल ही की दिल्ली बलात्कार की घटना इस सच्चाई को उजागर करती है। साफ जाहिर है कि यह महज अत्याचार की घटना ही नहीं, बल्कि यह बर्बरता, क्रूरता, यातना का कुकृत्य करने और खूँखार पशुओं से भी बदतर इन्सानों के एक समूह द्वारा उस जघन्य कुकृत्य का आनन्द लेने की घटना है। इस घटना पर चर्चा-बहस बहुत हो रही है, लेकिन शायद ही कोई चर्चा इस हकीकत को लेकर होती है कि इण्टरनेट, मोबाइल फोनों, जनसंचार माध्यमों, फिल्मों और विज्ञापनों में अश्लीलता को हमारी सरकार द्वारा दिए जा रहे है सीधे बढ़ावे की वजह से ऐसा घटनाएं बढ़ रही हैं। अश्लीलता की आई यह बाढ़ ही ऐसे कामुक संवेदनहीन दरिन्दे बनने की ओर युवकों को धकेल रही है। हमारे संगठन को छोड़कर पूरे देश में कोई अन्य संगठन इस खतरे के बारे में नहीं बोल रहा है। अब हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि शासक इस पर फोकस नहीं करेंगे, क्योंकि देश की नैतिक रीढ़ तोड़ने का यह अन्तिम घातक हथियार ही उनके पास बचा है। इस तरह हम, सबसे पहले तो ये माँग कर रहे हैं कि समस्या को शुरूआत में ही खत्म कर देने के लिए इस खतरे को रोका जाए; लेकिन सख्त से सख्त सजा भी इस समस्या को दूर नहीं कर पाएगी। यह काम तो केवल मौजदू पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंक कर ही पूरा किया जा सकता है।

कॉमरेड राधाकृष्ण ने इस बात का अहसास करने और कॉमरेड शिवदास घोष के दिशा-निर्देशों के आधार पर जीवन-संघर्ष छेड़ने के लिए आलस्य/निष्क्रियता की बेड़ियों को तोड़ने का मजदूरों से आह्वान किया। कॉमरेड राधाकृष्ण ने कामना की कि एआईयूटीयूसी का 20वाँ राष्ट्रीय सम्मेलन और भी ताकतवर आन्दोलन की नींव रखे।

हड़ताल के ....

(पृष्ठ 4 का शेष)

हड़तालें मजदूरों के बीच व्यापक रूप से फैली होती हैं, कुछ मजदूर (कुछ समाजवादियों समेत) यह सोचने लगते हैं कि मजदूर वर्ग अपने का महज़ हड़तालों, हड़ताल कोषों या हड़ताल समितियों तक सीमित रख सकता है, कि अकेले हड़तालों के ज़रिए मजदूर वर्ग अपने हालात में पर्याप्त सुधार ला सकता है, यही नहीं, अपनी मुक्ति भी हासिल कर सकता है। यह देखकर कि संयुक्त मजदूर वर्ग में, यही नहीं, छोटी हड़तालों तक में कितनी शक्ति होती है, कुछ सोचते हैं कि मजदूर पूँजीपतियों तथा सरकार से जो कुछ भी हासिल करना चाहते हैं, उसके लिए बस इतना काफी है कि मजदूर वर्ग पूरे देश में आम हड़ताल संगठित करे। इसी तरह का विचार अन्य देशों के मजदूरों द्वारा भी व्यक्त किया गया था, जब मजदूर वर्ग आन्दोलन अपने आरम्भिक चरणों में था तथा मजदूर अभी बहुत अनुभवहीन थे। *पर यह गलत विचार है।* हड़तालें तो उन उपायों में से एक हैं, जिनके जरिए मजदूर वर्ग अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष करता है, परन्तु वे एकमात्र उपाय नहीं हैं; यदि मजदूर संघर्ष करने के अन्य उपायों की ओर ध्यान नहीं देते, तो वे मजदूर वर्ग की संवृद्धि तथा सफलताओं की गति धीमी कर देंगे। यह सच है कि यदि हड़तालों को कामयाब बनाना है, तो हड़तालों के दौरान मजदूरों के निर्वाह के लिए कोषों का होना जरूरी है। ऐसे मजदूर कोष (आम तौर पर उद्योग की पृथक् शाखाओं, पृथक् व्यवसायों तथा वर्कशॉपों में मजदूर कोष) तमाम देशों में रखे जाते हैं। परन्तु यहाँ रूस में यह बहुत कठिन है, क्योंकि पुलिस उनका पता लगाती है, धन जब्त कर लेती है तथा मजदूरों को गिरफ्तार करती है। निस्सन्देह, मजदूर उन्हें पुलिस से छुपाने में सफल रहते हैं; स्वभावतया ऐसे कोषों को संगठित करना महत्वपूर्ण है और हम मजदूरों को उन्हें संगठित करने के विरुद्ध परामर्श नहीं देना चाहते। परन्तु यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि मजदूर कोष कानून द्वारा निषिद्ध होने पर वे चन्दा देनेवालों को बड़ी संख्या में आकृष्ट करेंगे; और जब तक ऐसे संगठनों की सदस्य-संख्या कम होगी, ये कोष बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं होंगे। इसके अलावा उन देशों तक में, जहाँ मजदूर यूनियनें खुलेआम विद्यमान हैं तथा उनके पास बहुत बड़े कोष हैं, मजदूर संघर्ष के साधन के रूप में अपने को हड़तालों तक सीमित नहीं कर सकता। जो कुछ आवश्यक है, वह उद्योग के मामलों में एक विघ्न (उदाहरण के लिए संकट, जो रूस में आज समीप आता जा रहा है) है, और कारखानों के मालिक तो जानबूझकर हड़तालें तक करायेंग, क्योंकि कुछ समय के लिए काम का बन्द होना तथा मजदूर कोषों का घटना उनके लिए लाभप्रद होता है। इसलिए मजदूर किसी भी सूरत में अपने को हड़ताल सम्बन्धी कार्रवाइयों तथा हड़ताल समितियों तक सीमित नहीं कर सकते। दूसरे, हड़तालें वहीं सफल हो सकती हैं, जहाँ मजदूर पर्याप्त रूप में वर्ग-सचत होते हैं, जहाँ वे हड़तालें करने के लिए सही अवसर चुनने में सक्षम होते हैं, जहाँ वे यह जानते हैं कि अपनी मांगे किस तरह पेश की जाती हैं, और जहाँ उनके समाजवादियों के साथ सम्बन्ध होते हैं और उनके जरिए पर्चे और पैम्फलेट हासिल कर सकते हैं। रूस में ऐसे मजदूर अभी बहुत कम हैं, उनकी तादाद बढ़ाने के लिए हर चेष्टा की जानी चाहिए, ताकि मजदूर वर्ग का ध्येय जन साधारण को बताया जा सके, उन्हें समाजवाद तथा मजदूर वर्ग के संघर्ष से अवगत कराया जा सके। समाजवायिों तथा वर्ग-सचेत मजदूरों को इस उद्देश्य के लिए समाजवादी मजदूर वर्ग पार्टी संगठित कर यह कार्यभार संयुक्त रूप से सम्भालना चाहिए। तीसरे, जैसा कि हम देख चुके हैं, हड़तालें मजदूरों को बताती हैं कि सरकार उनकी शत्रु है, कि सरकार के विरुद्ध संघर्ष चलाते रहना चाहिए। वस्तुत: हड़तालों ने ही धीरे-धीरे तमाम देशों के मजदूर वर्ग को मजदूरों के अधिकारों तथा समग्र रूप में जनता के अधिकारों के लिए सरकारों के खिलाफ संघर्ष करना सिखाया है। जैसा कि हम कह चुके हैं, केवल समाजवादी मजदूर पार्टी ही मजदूरों के बीच सरकार तथा मजदूर वर्ग के ध्येय की सच्ची अवधारणा का प्रचार करके यह संघर्ष चला सकती है। किसी और अवसर पर हम खास तौर पर इस बात की चर्चा करेंगे कि रूस में हड़तालें किस तरह संचालित होती हैं और वर्ग-सचेत मजदूरों को कैसे उनका उपयोग करना चाहिए। यहाँ हम यह इंगित कर दें कि हड़तालें,, जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, स्वयं युद्ध नहीं, वरन् ''युद्ध का विद्यालय'' है, कि हड़तालें संघर्ष का केवल एक साधन हैं, मजदूर वर्ग आन्दोलन का केवल एक रूप है। अलग-अलग हड़तालों से मजदूर श्रम करनेवाले तमाम लोगों की मुक्ति के लिए पूरे मजदूर वर्ग के संघर्ष की ओर बढ़ सकते हैं और उन्हें बढ़ना चाहिए, और वे वस्तुत: तमाम देशों में उस ओर बढ़ रहे हैं। जब तमाम वर्ग-सचेत मजदूर समाजवादी हो जाएंगे, अर्थात् जब वे इस मुक्ति के लिए प्रयास करेंगे, जब वे मजदूरों के बीच समाजवाद का प्रसार कर सकने, मजदूरों को अपने दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष के तमाम तरीके सिखा सकने के लिए पूरे देश में ऐक्यबद्ध हो जाएंगे, जब वे एक ऐसी समाजवादी पार्टी का निर्माण करेंगे, जो सरकारी उत्पीड़न से समग्र जनता की मुक्ति के लिए, पूँजी के जुए से समस्त मेहनतकश जनता की मुक्ति के लिए संघर्ष करती है, केवल तभी मजदूर वर्ग तमाम देशों के मजदूरों के उस महान आन्दोलन का अभिन्न अंग बन सकेगा, जो समस्त मजदूरों को ऐक्यबद्ध करता है तथा जो लाल झण्डा बुलन्द करता है, जिस पर ये शब्द लिखे हुए हैं: ''दुनिया के मजदूरों, एक हो!''

अंग्रेजी से अनूदित
1899 के अन्त में लिखित।
पहले पहल 1924 में प्रकाशित।

वरिष्ठ सदस्य कॉ. दादा लामघरे का निधन

एसयूसीआई(सी) नागपुर कमेटी के वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड दादा लामघरे एआईयूटीयूसी के 20वें राष्ट्रीय अधिवेशन बंगलुरू में प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आ रहे थे। जाते समय उनकी अचानक तबियत खराब होने से उन्हें एमएससी कर्नाटक यूनिट की मदद से ''संत मार्थस हास्पिटल' बंगलुरू में भरती कराया गया था। उनके हाथ को टिटनस होने से साधारण शल्य क्रिया भी की गई। लेकिन उनकी किडनी और हॉर्ट ने काम करना बंद करने से 5 जनवरी को सुबह 3:30 बजे उनका दुखद निधन हो गया। उन्हें बंगलुरू से एम्बुलैंस में नागपुर लाकर अंतिम संस्कार किया गया।

कॉ. दादा लामघरे जब छोटे थे तभी उनके पिताजी का देहांत हो गया था। उनकी मां ने ही मजदूरी करके 5 बहनों और उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया था। वे 1977 से एक प्राईवेट कारखाने, विदर्भ विनियर प्लाईवुड एम.आई.डी.सी. नागपुर में काम करते थे। उन्हें सामाजिक कार्य में रुचि थी। 1985 के दौरान कॉ. माधव भोंण्डे से मुलाकात होने से उनकी नजदीकी बढ़ी और पार्टी के संपर्क में आए। वे ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे। फिर भी वे उपन्यास, मजदूर वर्गीय साहित्य, किताबें और पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते थे। शांत स्वभाव के रहने के बावजूद वह महत्वपूर्ण मुद्दों पर गंभीर सलाह देते थे। उन्हें हरदम लगता था कि, पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति से ही दलित, शोषित-पीड़ित, गरीब और मध्यमवर्गीय मेहनतकश जनता की मुक्ति हो सकती है। इसलिए वह हरदम मजदूरों के बीच इस बारे में चर्चा करते थे। उनके नहीं रहने से उनके परिवार के साथ एसयूसीआई(सी) पार्टी और मजदूर आन्दोलन का नुकसान हुआ है।

कॉ. दादा लामघरे को श्रद्धांजलि देने के लिए एसयूसीआई(सी) नागपुर कमेटी की ओर से 16 जनवरी को स्थानीय 'राष्ट्रीय भाषा भवन' नागपुर में शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (सी) की नागपुर इकाई के संगठक कॉ. माधव भौण्डे ने की। शोक सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के केन्द्रीय नेता पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. रणजीत धर थे। कॉ. दादा लामघरे को श्रद्धांजलि देते हुए उन्होंने कहा कि नागपुर में कॉमरेड माधव भौण्डे के नेतृत्व में जिन्होंने पार्टी का झण्डा बुलन्द किया कॉमरेड दादा लाघमरे उनमें अन्यतम थे। वर्ग चेतना खूब उन्नत हुए बिना यह काम सम्भव नहीं हो सकता। वे साधारण कारखाना मजदूर थे। उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं हुई लेकिन वे सहज रूप में ही सर्वहारा संस्कृति का स्पर्श कर पाये थे। हम सबको कॉ. लाघमरे की यह सर्वहारा संस्कृति अपनाकर ही समाजवादी व्यवस्था को लाने के लिए लड़ना होगा तभी कॉ. दादा लामघरे को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सभा में एआईयूटीयूसी के नागपुर अध्यक्ष कॉ. संजय सोनेकर, कॉ. अशोक पवार, इंकलाबी सर्वहारा मंच के कॉ. चन्द्रपाल, जिला परिषद यूनियन के अध्यक्ष कॉ. राजेन्द्र गंगोत्री, डॉ. नामदेवी लाघवे, संदेश भालेकर, सीपीआई(एमएल) -लिबरेशन के हरेन श्रीवास्तव, सामाजिक कार्यकर्ता लिलाबाई म्हैसकर, गडचिरोली के पापडकर गुरुजी आदि ने शोक संवेदना व्यक्त की। सभा का संचालन कॉ. रवीन्द्र साखरे ने किया। सभा में कॉ. दादा लामघरे के परिवार के भाई-बहन भी उपस्थित थे। अर्न्तराष्ट्रीय गान के साथ सभा का समापन हुआ।

कॉमरेड दादा लाघमरे लाल सलाम!

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 5 February, 2013

छात्रों के शिक्षण शिविर का आयोजन

शिक्षण शिविर में मुख्य वक्ता एआईडीएसओ के महासचिव कॉ. सौरभ मुखर्जी

दुर्ग (छ.ग.) : ऑल इण्डिया डीएसओ के 58वें स्थापना दिवस के अवसर पर शिक्षा की विभिन्न समस्या एवं समाधान विषय पर 20 जनवरी को नेताजी सुभाष प्रायमरी स्कूल कैलाश नगर में एक दिवसीय शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग जिले के कार्यकर्ता व छात्र शामिल हुए।

इस शिक्षण शिविर में मुख्य वक्ता एआईडीएसओ के अखिल भारतीय महासचिव कॉ. सौरभ मुखर्जी थे। उन्होंने छात्रों से आह्वान करते हुए कहा कि सभी के लिए धर्मनिरपेक्ष, जनवादी व वैज्ञानिक शिक्षा की मांग पर उन्नत नीति-नैतिकता अपनाकर और उन्नत चरित्र निर्माण करते हुए आजादी आन्दोलन के महान क्रान्तिकारियों व मनीषियों के जीवन-संघर्षों से प्रेरणा लेकर सामाजिक अन्याय, शोषण और शैक्षणिक समस्याओं के खिलाफ एकजुट होकर आन्दोलन निर्मित करे।

इस शिक्षण शिविर में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी के दुर्ग जिला इंचार्ज कॉ. विश्वजीत हारोडे एआईडीएसओ के राज्य संयोजक कॉ. आत्माराम साहू और दुर्ग जिला अध्यक्ष महेन्द्र कुमार साहू उपस्थित थे।

गत 25 दिसम्बर को त्रिपुरा के अगरतला में ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) का प्रथम राज्य सम्मेलन आयोजित हुआ। एआईएमएसएस की सर्व भारतीय अध्यक्ष कॉमरेड छाया मुखर्जी सम्मेलन की मुख्य वक्ता थी और संगठन की महासचिव कॉमरेड जयालक्ष्मी मुख्य अतिथि थी। सम्मेलन में एक 11 सदस्यीय राज्य कमेटी का गठन किया गया जिसकी अध्यक्ष शिवानी दास और सचिव कॉ. शैफाली चौधरी को चुना गया।

जिला किसान सम्मेलन

रेवाड़ी: ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन जिला रेवाड़ी का चौथा जिला प्रतिनिधि सम्मेलन 27 जनवरी को यहाँ स्थानीय गुजर धर्मशाला में जिला प्रधान जयनारायण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें जिला से सैकड़ों किसानों मजदूरों ने भाग लिया। सम्मेलन का संचालन संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कॉमरेड अनूप सिंह मातनहेल ने किया।

अपने मुख्य सम्बोधन में प्रदेशाध्यक्ष ने कहा कि आज मजदूर विभिन्न समस्याओ से ग्रस्त हैं। सरकार पूँजीपतियों के स्वार्थ में किसानों की उपजाऊ भूमि का जबरन अधिग्रहण कर रही है। किसानों की फसलों के वाजिब दाम नहीं दिए जा रहे। नहरी का उचित प्रबन्ध नहीं है। खाद बीज डीजल, पैट्रोल व अन्य कृषि के काम आने वाली चीजों के दाम बढ़ाकर सरकार किसानों पर बोझ डाल रही है। इन समस्याओं के खिलाफ किसान आन्दोलन तेज करने का आह्वान उन्होंने किया।

सम्मेलन में जिला सचिव कॉ. रामकुमार ने मूल प्रस्ताव व आय-व्यय का ब्योरा पेश किया जिस पर प्रतिनिधियों ने चर्चा की। दिल्ली के 'दामिनी-काण्ड' पर एक शोक प्रस्ताव पास किया। सम्मेलन को नई जिला कमेटी का चुनाव हुआ जिसमें जयनारायण को प्रधान, रामकुमार को सचिव, रणबीर को उपपधान, कर्ण सिंह को सहसचिव चुनने सहित 28 सदस्यों की कार्यकारिणी गठित की गई। इन्कलाबी नारों के साथ सम्मेलन की कार्रवाई समाप्त हुई।

पीजीआई हस्पताल में शुल्क वृद्धि का विरोध

रोहतक (हरयाणा): पीजीआई मैडिकल अस्पताल में एक फरवरी से अचानक व चुपके से मरीजों की बिमारी के टेस्टों, दाखिले, बिस्तर, भोजन, इलाज व प्रमाण-पत्रों की फीस लागू करने का 30 दिसम्बर को जारी एक बयान के जरिये एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की हरियाणा राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड सत्यवान ने कड़ा विरोध किया। प्रदेश के एकमात्र बड़े चिकित्सा संस्थान में जनसाधारण परिवारों को मुफ्त चिकित्सा देने से इंकार करने को बेहद अमानवीय व पूर्णतया नाजायज करार दिया है। इस निर्णय का मायने है गैर बीपीएल, गरीब व कम आमदनी के परिवार जनों को मौत के मुँह में धकेलना और जीवन भर उन्हें बिना इलाज सिसकते रहने के लिए मजबूर करना या इलाज के लिए मजबूरी में अपनी घर-सम्पत्ति बेचने के लिए मजबूर करना।

'सबसे आगे हरियाणा' का दावा करने वाली हुड्डा सरकार का अपने प्रदेशवासियों को मुफ्त इलाज से इन्कार करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। एक ऐसे हालात में जब जिला स्तरीय सिविल हस्पताल सफेद हाथी बन कर स्वास्थ्य सेवाओं को ठेंगा दिखा रहे हैं तो सामान्य परिवारों के मरीज कैसे इलाज कराएंगे। मुफ्त टेस्टों के अभाव में गम्भीर बीमारियाँ पनपती रहेंगी जिससे नागरिकों का जीवन ही खतरे में पड़ जाएगा।

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने हरियाणा सरकार व पीजीआई प्रशासन के इस अमानवीय व जनविरोधी फैसले को रोकने के लिए नागरिकों, चिकित्सों, जनसंगठनों से मिलकर आगे आने की अपील की है। आम जनता को इस निर्णय के खिलाफ अपनी प्रभावकारी आवाज उठानी चाहिए जिसे चुपके से अचानक लागू करने के लिए पीजीआई प्रशासन तैयार बैठा है।

आवश्यक सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि स.दृ. का अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क जल्द से जल्द निम्न पते पर जमा करें :
सम्पादक, सर्वहारा दृष्टिकोण, 3A/38, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com